

# ऋग्वेद

मण्डल १०

सूक्त १८४

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Rigveda

Maṇḍala 10

Sukta 184

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

गर्भ सुक्त मे गर्भ की रक्षा और उसके पुष्ट होने के लिए प्रार्थना है

Synopsis

**Garbha sukta contains prayers for protection and strengthening of the fetus.**

गर्भकर्ता प्रजापत्यो विष्णुर्वा ऋषिः। लिङ्गोक्ताः देवताः ।

छन्दः	
१,२	अनुष्टुप्
३	निचृदनुष्टुप्

garbhakartaa prajaapatyo viṣṇurvaa ṛṣihī. liṅgoktaaḥ devataaḥ.

Chhandah	
1,2	anuṣṭup
3	nichṛidanuṣṭup

विष्णु॒र्योनिं॑ कल्पयतु॒ त्वष्टा॑ रूपाणि॑ पिंशतु ।  
आ सिञ्चतु॒ प्रजाप॑तिर्धा॒ता गर्भं॑ दधातु ते ॥१॥

विष्णुः योनिम् कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।  
आ सिञ्चतु प्रजापतिः धाता गर्भम् दधातु ते ॥

(विष्णुः) सबका पालन करने वाला परमात्मा (योनिम्) स्त्री के गर्भाशय को (कल्पयतु) विकसित करे । (त्वष्टा) रचने वाला परमात्मा गर्भस्थ बालक के (रूपाणि) अलग अलग अंगों को (पिंशतु) पृथक् रूप दे । (प्रजापतिः) सब प्राणियों का स्वामी (आ सिञ्चतु) गर्भ को सींचे । (धाता) विश्व को धारण करने वाला (ते) तेरे (गर्भम्) गर्भ को (दधातु) पुष्ट व स्थिर रखे ।

**1. Om viṣṇur-yoniṁ kalpayatu tvaṣṭāa roopaṇi piṁshatu  
aa siñchatu prajaapatir-dhaataa garbhan dadhaatu te**

May (viṣṇur) the Sustainer of living beings (kalpayatu) strengthen (yoniṁ) woman's reproductive organs! May (tvaṣṭāa) the Sculptor of universe provide (piṁshatu) distinctive qualities to the fetus' (roopaṇi) various organs! May (prajaapatir) the Lord of all creations (aa siñchatu) nourishes the fetus! May (dhaataa) the Support of the universe, (dadhaatu) support (te) your (garbhan) womb and fetus.

गर्भं॑ धेहि सिनीवालि॑ गर्भं॑ धेहि सरस्वति ।  
गर्भं॑ ते अ॒श्विनौ॑ दे॒वावा ध॑त्तां पुष्कर॑स्रजा ॥२॥

गर्भम् धेहि सिनीवालि गर्भम् धेहि सरस्वति ।  
गर्भम् ते अ॒श्विनौ॑ दे॒वौ आ ध॑त्ताम् पुष्कर॑स्रजा ॥

हे (सरस्वति) सरस्वती स्वरूप (सिनीवालि) अन्नपूर्णा स्त्री ! (गर्भम्) गर्भ (धेहि) धारण कर।  
(अश्विनौ देवौ) सूर्य व चन्द्रमा का (पुष्करस्रजा) प्रचुर प्रकाश (ते) तेरे (गर्भम्) गर्भ को (आ धत्ताम्) पुष्ट रखे । ।

2. Om garbhan dhehi sineevaali garbhan dhehi sarasvati  
garbhan te ashvinau devaavaa dhattaam puṣhkarasrajaa

O Woman, (*sineevaali*) nourisher of the household and the living image of (*sarasvati*) Goddess Sarasvatee! May you (*dhehi*) become (*garbhan*) pregnant! May (*puṣhkarasrajaa*) the abundant rays of light from the (*devaav*) twin lords of the skies i.e. (*ashvinau*) the Sun and the Moon (*aa dhattaam*) nourish (*te*) your (*garbhan*) fetus!

हिरण्ययी' अरणी यं निर्मन्थतो अश्विना' ।

तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि सूतवे ॥३॥

हिरण्ययी इति' अरणी इति' यम् निःमन्थतः अश्विना' ।

तम् ते गर्भम् हवामहे दशमे मासि सूतवे ॥

(यम्) जैसे दो (अरणी) अरणियों के (निःमन्थतः) घर्षण से (हिरण्ययी) सुनहरी अग्नि प्रकट होती है (तम्) वैसे ही (अश्विना) सूर्य के समान पुरुष के वीर्य और चन्द्र के समान स्त्री के रज के मिलन से गर्भ उत्पन्न होता है । (ते) तेरे उस (गर्भम्) गर्भ को (दशमे) दसवें (मासि) मास में (सूतवे) प्रसव से बाहर आने का (हवामहे) आहवान करते हैं ।

3. Om hiraṇyayee araṇee yan nirmanthato ashvinaa  
tan te garbhaṇ havaamahe dashame maasi sootave

(yan) As two (*araṇee*) fire sticks when (*nirmanthato*) rubbed together produce (*hiraṇyayee*) golden and radiant fire, (*tan*) similarly the interaction between (*ashvinaa*) male and female produce a fetus. We pray that (*te*) your (*garbhaṇ*) fetus attain fullness in (*dashame*) ten (*maasi*) months and (*havaamahe*) invite your child into this world via (*sootave*) labor.